शहीदे आज़म
भगतसिंह

शहीदे-आज़म भगतसिंह

शहीदे-आजम भगतसिंह

सत्य शकुन

विक्रांत पब्लिशिंग हाउस
रोहिणी, दिल्ली—85

सत्य शकुन

प्रकाशक : विक्रान्त पब्लिशिंग हाउस
ए-7, तीसरी मंजिल, चेतक अपार्टमेंट, सेक्टर-9
रोहिणी दिल्ली-110085

आवरण : शशि वर्मा

मुद्रक : एस. एन. प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

समर्पण उनके नाम

जिन्होंने शब्द की सामर्थ्य दी
सोच की दीप्ति,
अभिव्यक्ति की ऊर्जा
और स्वाध्याय की एकनिष्ठता,
जिन्होंने व्यक्ति को
समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पित रहने का
दिया मंत्र,
जैसे गीता में कहा है।
जिये जो विश्वासों के लिए
उनका विरुद गाओ
मानवता के लिए जो बन गए खाद उनके
[illegible] कलम चलाओ
ऐसे मेरे पिता को समर्पित [illegible]
[illegible], वे आज होते
और [illegible]
[illegible]
[illegible]
कम से कम
उन्हें यकीन तो हो गया होता कि
बह गये शब्द भी
उगते हैं।
काश [illegible]

—सत्य शकुन

आइए, मनन करें !

आज स्वतन्त्रता के इतिहास को पढ़ते समय लगता है मानो हम तीर्थ-यात्रा कर रहे है, पर जब अपने अंतर पट से दूर हटकर हम अपने विचारो का गहनतम विश्लेषण करते है, तो अनुभव होता है कि यह यात्रा सपूर्ण यात्रा सिद्ध नही हुई, क्योकि यह यात्रा हम अंतर-नयन की ओर से की ही नही गई। चारो ओर कही एक कमी खटकती है, एक सूनापन हृदय को सालता है कि क्या क्रान्तिकारियो का स्वाधीनता मे कोई योगदान नही था? यदि था, तो क्या इतना सीमित था कि इन लोगो की तमाम गतिविधिया, क्रियाकलाप, जीवन-वृत्त इतिहास की पुस्तक के दो-चार पन्नो मे सिमट जाए।

आज की इतिहास विषय की पुस्तके तो शायद यही मानती है। हम दोष अग्रेजी सरकार को देते थे कि वे अपने निजजनो पर अनुचित दबाव डालकर यथार्थ को प्रकट नही होने देते। लेकिन अब तो स्वाधीनता प्राप्त किए 41 वर्ष हो गए। अब हम कौन-सी गलती कर रहे है कि हम इन शहीदो के सर्वांग जीवन-वृत्त को इतिहास मे उचित स्थान नही दे पा रहे है? इन शहीदो का कथन था कि आने वाली पीढ़ी उनके क्रियाकलापो का विश्लेषण स्वत ही करेगी।

हमारी अतर्ज्योति, अनुप्रेक्षा आखिरकार इतनी निर्जीव क्यो है कि हम जान-बूझकर उत्पन्न किए गए इस अध-तामस को नही चीर पा रहे है? इन अतिक्षिप्त वीरो के अकल्मष चरित्रो को उजागर करने मे हम सकोच क्यो कर रहे है? इनकी अकिचनता के पीछे क्या दर्शन था, उसे हम सामने लाने मे क्यो कतरा रहे है? इनके कार्यो सिद्धान्तो, विधियो और अडिग विचारो से जुडी अदीनवृत्ति एव भावना को हम तार-तार कर देखने का सामर्थ्य क्यो नही जुटा पा रहे है? धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलुओ के अनस्तीर्ण प्रश्नो पर शहीदो के अनादृत विचारो को रेशा-रेशा करके देखने का साहस हम क्यो नही जुटा पा रहे है? यह कार्य हम नही करेगे तो कौन करेगा?

इसके लिए हमे अनीप्सित भावनाओ को भी गले लगाना होगा, और स्वय को किसी भी वाद मे अनुगृहीत न करके, अपनी नीर-क्षीर-विवेक-क्षमता को काम मे लेकर, एक निष्पक्ष जिज्ञासु अध्येता बनकर, इन वीर शिरोमणियो के जीवन-वृत्त